मूल्य समय को संवारने का उपक्रम है

मीडिया समाज का ही तो उत्पाद है। जब समाज में, व्यक्ति के आचरण-व्यवहार में मानवीय मूल्य नहीं हैं तो केवल मीडिया या मीडियाकर्मियों से मूल्यों की अपेक्षा क्यों? क्यों केवल वे ही सामाजिक सरोकारों की चिंता करें? मूल्य तथा दायित्व संबंधी बहस का एक पक्ष यह भी है और इसे भी बार-बार उठाया जाता है। ऐसे भी कहा जाता है कि मीडिया के मूल्य हैं तो, पर पहले की तुलना में बदल गए हैं। यह बदलना व्यक्ति, समाज और मीडिया-स्थिति सापेक्ष और सामयिक है।

मीडिया समाज का उत्पाद है और समाज के लिए ही है। समाज की धारा को हम समझें। हम किसी बेईमान या मिलावट करने वाले किराना व्यापारी से सामान खरीदना चाहेंगे। हम चिकित्सक का मूल्य उसकी फीस से तय करते हैं या चिकित्सकीय प्रभाव और मरीज के प्रति उसके उत्तरदायित्व से। हम अपने बच्चों को महंगे स्कूलों में क्या केवल स्टेटस के कारण भेजते हैं और क्या शिक्षक से अपेक्षा करते हैं कि वह कम पैसे के कारण हिमालय को केरल के पास भी बता सकता है। हम अपने पड़ौसी से द्वेष, दंभ और असहयोग की अपेक्षा करते हैं। यानी समाज का ऐसा कौन सा व्यक्ति या वर्ग है जिससे हम मूल्यहीनता की स्वाभाविक अपेक्षा करते हैं और उसे जायज भी ठहराते हैं। संभवत: हम सभी सहमत होंगे कि हम सभी से शिष्टाचार, मर्यादा तथा सहयोग-मैत्री जैसे व्यवहार की ही अपेक्षा रखते हैं। हम किसी से भी मानवीय मूल्यों, मानवीय हितों के विपरीत व्यवहार नहीं चाहते। यह बात अलग है कि वर्तमान में ऐसी स्थिति एक हद तक आदर्श बनती जा रही है। व्यक्ति और समाज में स्पर्धा, स्वार्थ, असुरक्षा जैसी स्थितियों तथा भोग की कामना के कारण मानवीय मूल्यों का क्षरण हुआ अवश्य है पर हम इसे दोष ही मानते हैं गुण नहीं। हमारी आकांक्षा यही है कि यह स्थिति बदलनी चाहिए। समाज में जो विशेष हैं यानी जो समाज को आगे बढ़ाने, व्यवस्थित करने के निमित्त हैं, उनसे हम क्या चाहते हैं। शिक्षक, चिकित्सक, अधिकारी, लोकसेवक, विधायक, सांसद, सरपंच, पुलिस अधिकारी आदि विभिन्न समाज व्यवस्था से जुड़े व्यक्तियों को हम किस रूप में देखते हैं। क्या उनके दोष, दुर्गुण और असामाजिक व्यवहार हमें असहज नहीं करते। क्या हम सचमुच ही स्वीकार करते हैं कि मंत्री, विधायक, सांसद, अधिकारी, कर्मचारी सभी भ्रष्ट बने रहें। इस सब पर हमारी प्रतिक्रिया अब मर्यादा तोड़ने लगी

है। थाने का घेराव, अधिकारी से मारपीट, चिकित्सक तथा शिक्षकों के व्यवहार पर गुस्सा तथा अभद्र व्यवहार यह स्पष्ट करता है कि हम चाहते क्या हैं– मूल्यहीनता, अमर्यादा, दायित्वहीनता या इससे विपरीत। पिछले एक दशक में तो मंत्री, सांसद, अधिकारी तथा अन्य बड़े पदों को लोगों ने ही न्याय के दरवाजे तक पहुंचाकर ही दम लिया है। समाज तथा व्यक्ति के हृदय में आज भी मूल्यों की ही आकांक्षा है। भ्रम, भय, लोभ या विकारवश व्यक्ति के आचरण की भिन्नता को अभी भी कोई उचित नहीं ठहराता। वह राग–अनुराग, निजता आदि के कारण साथ खड़ा हो जरूर जाता है, पर स्थिति बदलते ही वह अपने अंतस्थ से ही संचालित होने लगता है। उसकी अंतर्धारा में अब भी मानवीय मूल्य हैं।

मीडिया पाठक के लिए न व्यवसाय था, न है। वह उससे अपने समाज को समझने और उसमें हस्तक्षेप करके समाज को व्यवस्थित करने की अंत:क्रिया करना चाहता है। मीडिया से उसका सामाजिक शिक्षण तथा सामाजीकरण होता है। ऐसे निकाय से वह मूल्यों की अपेक्षा क्यों न करे। उसके लिए मीडिया उत्पाद नहीं है। मीडिया–नियंत्रकों के लिए व्यवसाय हो सकता है और उस अर्थ में वे उसे उपभोगी उत्पाद भी मानने की जिद कर सकते हैं, पर मीडिया के उपयोगकर्ता के लिए वह जैविक, प्राणवान, अंतर्क्रिया का माध्यम है। तभी तो वह पत्र लिखता है। तभी उसका मन लेख के रूप में व्यक्त होता है। वह पत्रकार को शिक्षक या चिकित्सक या संत–साधु की तरह विश्वसनीय और अनुकरणीय मानता है। वह उसमें एक तरह से नायक की छबि मानता है। उसका मूल्यहीन हो जाना उसका स्वप्न भंग है, जिसे वह कभी नहीं चाहेगा। हिन्दु के संपादक एन. राम, जनसत्ता के सलाहकार संपादक प्रभाष जोशी, नईदुनिया के प्रधान संपादक अभय छजलानी सहित कई संपादकों ने अपने वक्तव्य और व्याख्यानों में इस तरह के प्रसंगों पर पाठकों को सक्रिय, सचेत होकर मीडिया को अपने सामाजिक, उत्तरदायित्व को याद दिलाने की जरूरत एक से अधिक बार बताई भी है। मीडिया से संबद्ध लोगों में भी अब दो धाराएं बहुत साफ हैं। मनोज श्रीवास्तव जैसे उत्तरदायी अधिकारी, एन. राम, प्रभाष जोशी जैसे संप्रेषक, राम कुमार अग्रवाल, गुलाब कोठारी जैसे मूल्य पक्षधर, मीडिया नियंत्रक हैं जो मानते हैं कि मानवीय सरोकार तथा मूल्यों की वरीयता के साथ ही मीडिया की उपस्थिति स्वीकार्य होगी। इस धारा में लोग बढ़ रहे हैं, घट नहीं रहे हैं। यह भी इसी चाहत का परिणाम है।

'मूल्यानुगत मीडिया' का अनुभव तो यही है कि कोई समझदार पत्रकार

मीडिया को 'ड्रग संवाहक' के रूप में कभी नहीं देखना चाहता है। वह सक्रिय है कि मीडिया बे-आवाज को प्रखरता दे, अंधता से रोशन करे और सतत प्रगति पथ पर बढ़ने में सहयोगी हो। इस अर्थ में उसकी पक्षधरता स्वीकार्य भी है। उसकी पक्षधरता निजी एवं स्वार्थ या सत्ता अथवा व्यवसाय के संवर्धन में न स्वीकार थी और न होगी। हां, मूल्यों के सूचीकरण, उनकी सामयिकता एवं उपयोगिता या बीज-बिन्दु विमर्श का विषय हो सकता है। उस पर चर्चा भी हो सकती है। होनी भी चाहिए। यह इसलिए भी कि कोई भी समाज या व्यक्ति वायवी आदर्शों में अधिक समय नहीं चल सकता या अपने समय की चुनौती का मुकाबला करने में असमर्थ होता है। मूल्य समय को संवारने या संस्कार देने का उपक्रम है और यही उनका बने रहने का आशय और अर्थ भी है।

प्रो. कमल दीक्षित